जनवरी–मार्च, 2026 वर्ष : 27 अंक : 1

हिन्दी जगत

विश्व हिन्दी न्यास का त्रैमासिक प्रकाशन

विश्व हिन्दी न्यास
WORLD HINDI FOUNDATION, INC.

A Tax-Exempt Charitable & Educational Foundation (ID 31-1679275)

Website : www.worldhindifoundation.org

Board of Directors

Executive Director

Dr. Anchala Sobrin
20 Presidential Way, Hopewell Junction, NY 12533
Tel: (845) 226 2542 । Email: hindinyas@gmail.com

Secretary

Mrs. Padmini Prasad
1282 Royal Pointe Lane, Ormond Beach, FL 32174
Tel: (845) 764 1058 । Email: prasad.padmini@gmail.com

Treasurer

Mr. Pradeep Agarwal
25, Oak Tavern Circle, Branchburg NJ 08876
Tel: (646) 472 6320 । Email: pnagarwal@gmail.com

Directors

Dr. Surendra Nath Pandey, GA (706) 610 1601
pandeysn@yahoo.com
Mrs. Seema Khurana, NY (845) 227 8605
seemakhurana1223@gmail.com
Mrs. Sharmishtha Dutta Banerjee NY (845) 764 9014
sduttabanerjee@gmail.com
Mr. Anil Agarwal, NY (718) 271 3129
manishi.anil@gmail.com
Prof. Suresh Rituparna, India (+91) 09810453245
rituparna.suresh@gmail.com
Dr. Shyam Narayan Shukla, CA (510)770-1218
shuklas@comcast.net
Dr. Ila Prasad, TX (832) 446-3677
ila_prasad1@yahoo.com

Chapter Directors

Buffalo: Mrs. Meena Rustgi (716) 632 5768
rustgime@roadrunner.com
California: Mrs. Nirmala Shukla (510) 770 1218
nirmalashukla@comcast.net
Chicago: Mr. Kamal Gupta (847) 612 4244
citkam@gmail.com
New Jersey: Mr. Sharad Agarwal (732) 283 0566
sharad@sntravel.net
New York: Mr. Man Mohan Maheshwari (212) 678 9011
m_wari@yahoo.com

Web Master

Mr. Saugata Banerjee
Email : ronbans@gmail.com

Editor Hindi Jagat & International Co-ordinator

Prof. Suresh Rituparna
221 Prabhavi Apartments, Plot No. 29B,
Sector 10, Dwarka, New Delhi 110075
Tel: 91 11 4558 4374, Mob.: 91 98104 53245
Email: rituparna.suresh@gmail.com

विश्व हिन्दी न्यास की परिकल्पना (Vision)

1. एक ऐसा विश्व जहाँ हिन्दी एक महत्त्वपूर्ण वैश्विक-भाषा के रूप में विकसित हो।
2. एक ऐसी कार्य साधक भाषा बनाने का प्रयास जिसका प्रयोग सरकारी एवं निजी संस्थानों के अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र संघ में भी हो सके।

विश्व हिन्दी न्यास का उद्देश्य (Mission)

1. हिन्दी भाषा के प्रति वैश्विक जागृति लाने का प्रयास
2. ज्ञान की विभिन्न शाखाओं में इसके प्रयोग का विस्तार
3. हिन्दी भाषी समुदायों के बीच संस्कृति जन्य ज्ञान पर आधारित मूल्य बोध एवं शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार

विश्व हिन्दी न्यास का लक्ष्य (Goals)

1. न्यास का प्रयास रहेगा कि वह ऐसे व्यक्तियों एवं संस्थाओं को अपना समर्थन और प्रोत्साहन दे जो हिन्दी भाषा के शिक्षण एवं प्रयोग के क्षेत्र में जागृति फैलाने के कार्य से जुड़ी हुई हैं।
2. दक्षिण एशियाई विद्वानों, लेखकों, कलाकारों एवं विशेषज्ञों के सहयोग से विशिष्ट परियोजनाओं का सूत्रपात करना।
3. एक ऐसे अन्तर्जालिक आभासी मंच का निर्माण करना जिस पर 'ऑनलाइन सेटिंग' के माध्यम से भारतीय सामुदायिक केन्द्रों एवं शिक्षण संस्थाओं तक हिन्दी-शिक्षण-कार्यक्रमों को पहुँचाया जा सके।

न्यास की सदस्यता

विश्व हिन्दी न्यास के उद्देश्य और लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हमें अनेक सक्रिय सदस्यों की आवश्यकता है। हमारा प्रयास है कि जो भी व्यक्ति न्यास के उद्देश्य, लक्ष्य एवं प्रेरक कार्यों में रूचि रखता है, न्यास का सदस्य बनने के लिए उसका हम सहर्ष स्वागत करते हैं। न्यास का सदस्य बनने के लिए तीन श्रेणियां हैं--

1. आजीवन सदस्य (सदस्यता राशि - $400 मात्र)
2. वार्षिक पारवारिक सदस्य (सदस्यता राशि - $ 40 मात्र)
3. व्यक्ति सदस्य (सदस्यता राशि - $25 मात्र)
4. छात्र सदस्य (सदस्यता राशि - $ 10 मात्र)

अनुदानदाता सदस्यों के लिए पांच श्रेणियां हैं:-

1. हिन्दी रत्न - $20,000 अथवा इससे अधिक
2. हिन्दी संरक्षक - $10,000 अथवा इससे अधिक
3. हिन्दी हितकारी - $5,000 अथवा इससे अधिक
4. हिन्दी मित्र - $3,500 अथवा इससे अधिक
5. हिन्दी शुभचिन्तक - $2500 अथवा इससे अधिक

आप किसी भी श्रेणी का चुनाव कर सकते हैं और अनुदान का चैक कोषाध्यक्ष (Treasurer) श्री प्रदीप अग्रवाल को निम्न- लिखित पते पर भेजने की कृपा करें।

25, Oak Tavern Circle, Branchburg, NJ 08876 USA
Tel: (646) 472-6320 Email: pnagarwal@gmail.com

न्यास की वेबसाइट पर जाकर सदस्यता फॉर्म

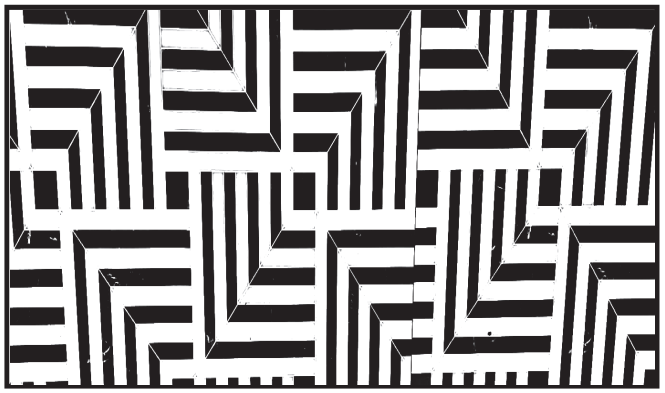

हिन्दी जगत

ISSN 1543-8651 (USA)

जनवरी-मार्च 2026 ● वर्ष : 27 अंक : 1

सम्पादक मंडल

प्रबंध सम्पादक
डॉ. अंचला सोब्रिन
Email : hindinyas@gmail.com, Tel : +1(845) 226-2542

सम्पादक
प्रो. सुरेश ऋतुपर्ण
Email: rituparna.suresh@gmail.com, Tel : 91-9810453245

●

सह-सम्पादक
इला प्रसाद
Email : ila_prasad1@yahoo.com, Tel : +1(832) 446-3677

निवेदन : कृपया प्रकाशन हेतु अपनी रचनाएँ सम्पादक मंडल के पास भेजें। पत्रिका में व्यक्त विचार स्वतन्त्र रूप से लेखकों के हैं, न्यास का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है तथा प्रकाशित रचनाओं के लिए हम किसी प्रकार का मानदेय देने में असमर्थ हैं।
इस अंक में प्रकाशित रचनाओं के लेखकों के प्रति हम अत्यन्त आभारी हैं।

विश्व हिन्दी न्यास,
World Hindi Foundation
20 Presidential Way Hopewell Junction,
New York, 12533
के लिए
डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण, अन्तर्राष्ट्रीय समन्वय-संयोजक द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।
मुद्रक : विकास कम्प्यूटर एंड प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

अनुक्रम

आपके पत्रों से		2
सम्पादकीय		3
नया साल सात कविताएँ	—विनोद खेतान	4
काव्य का वाचिक सम्प्रेषण	—आचार्य विष्णुकांत शास्त्री	5
लौट आओ	—त्रिलोक महावर	8
पाँच कविताएँ	—डॉ. कविता पनिया	9
लंबा सफ़र	—हरजेन्द्र चौधरी	10
अर्ध रात्रि के पश्चात	—अशोक व्यास	13
एक इलेक्ट्रौनिक होली	—प्रेम जनमेजय	14
दिसंबर-जनवरी का रिश्ता	—मनोहर व आशा	15
निर्णय	मूल ओड़िआ - डॉ गौरहरि दास अनुवाद - प्रदीप कुमार राय	16
फरवरी	—दीपक वोहरा	20
'डॉ जिवागो' बोरिस पास्तरनाक की अमर कृति	—एम. वेंकटेश्वर	21
झूठ को सच बनाने की साजिश और चित्रकला	—अशोक भौमिक	26
रिपोर्ताज भी साहित्य है	—भीष्म साहनी	27
कविता	—पंकज सुबीर	29
स्टेच्यू	—रंजना जायसवाल	30
बूढ़ी बुआ	—ज्ञानप्रकाश आकुल	33
पाँच कविताएँ	—केशव शरण	34
एक भिखारी की कथा	—श्यामल बिहारी महतो	35
साल का आख़िरी दिन	—सुधांशु फिरदौस	36
दो कविताएँ	—सुशांत सुप्रिय	36
धरोहर	—लेखिका : गिरीमा पारेखान —अनुवाद : डॉ. रजनीकान्त एस. शाह	37
सूत्र कविताएँ	—अदिति कंसल	39
पाँच कविताएँ	—जसवीर त्यागी	40
मैं लेखक हूँ !	—पूरन सरमा	41
बिजूके	—हरभगवान चावला	42
शुद्ध जात	—सुदर्शन रत्नाकार	42
बेर जितना बड़ा अनाज	—लियो टॉल्सटॉय —अनुवाद : कल्याणी अग्रवाल	43
भार	—डॉ. चंद्रेश कुमार छ्तलानी	44
गीतिका	—इन्दिरा किसलय	44
दो कविताएँ	—डॉ. यशोधरा भटनागर	45
हमारी असली ताकत	—सितांशु यशश्चन्द्र —अनुवाद : कुशल मेहता	45
पंचकन्या-अब बनो दुर्गा	—डॉ. अरुण गुप्ता	46
दो ग़ज़लें	—भारती शर्मा	46
महादेवी वर्मा से भेंट	—सुरेश ऋतुपर्ण	47

आवरण चित्र : सुरेश ऋतुपर्ण

आपके पत्रों से

हिन्दी जगत पत्रिका मिली जो हमेशा उत्साह और आनंद का स्रोत होती है।

सुषमा मुनीन्द्र की कहानी 'तूफ़ान का गुज़र जाना अच्छा होता है' कहानी में पति के धैर्य और सद्भावना की जीत होती है। सारी कहानी कोमलता और भावपूर्ण ढंग से पाठक की भावना को सहलाती है।

शैलजा सक्सेना की कहानी 'हम ज़िन्दा हैं' नेटिव अमेरिकन कौम का हृदय विदारक इतिहास और आज भी स्थिति में विशेष सुधार नहीं हुआ है, जान कर मैं हतप्रभ रह गयी। आरोप लगाया जाता है की वे मेहनती नहीं हैं, शराब पी कर अपनी ज़िंदगी बर्बाद करते हैं। शायद वे अपने भविष्य के प्रति इतने उदास हैं की जिजीविषा खो बैठे हैं। यह देश उनका था, प्रकृति प्रेम और उदार, सरल जीवन!

विदेशिओं ने उनके सरल स्वभाव का फायदा उठाया और उन्हें कोने में धकेल दिया। अन्य विधाओं का मिश्रण पत्रिका को आकर्षक बनता है। बधाई व शुभ कामनाओं सहित –

—मीरा गोयल (यू.एस.ए.)

हिन्दी जगत का जुलाई-दिसंबर अंक मिला है। महाकवि नीरज जी की जन्म-शताब्दी पर आपका सम्पादकीय अच्छा लगा और प्रदीप सरदाना जी का लेख भी। और नीरज जी की ग़ज़लें भी जिन्हें हिन्दी नाम देते हुए वे गीतिका कहते थे, लेकिन इनकी प्रस्तुति नीरज के गीत कहकर की गई है जो भ्रमात्मक हो गया है। वहीं जनाब मुख़्तार अहमद की ग़ज़लें ग़ज़ल के मानक पर खरी नहीं हैं। पंकज सुबीर जी की कविताएँ संवेदना से भरी हैं। कवर पृष्ठ तीन पर आपकी कविता की आंशिक पंक्तियाँ और छायांकन अत्यंत भावप्रवण और आकर्षक है। अंतिम कवर पृष्ठ पर कविवर भवानीप्रसाद मिश्र की सुप्रसिद्ध कविता 'कमल के फूल' के साथ भी आपका छायांकन दृष्टि को बाँधता है। ये रहे दो ख़ूबसूरत कविता पोस्टर। बुद्धिनाथ जी का संस्मरण अच्छा लगा जो गाँवों की विस्मृत होती विशिष्टताओं की याद दिलाता है। सुषमा मुनीन्द्र जी की कहानी 'तूफ़ान का गुज़र जाना अच्छा होता है' बारीक मनोविज्ञान की संवेदनात्मक कहानी है, एक शांत लय में भारी द्वंद्वों को समेटे। इसका सुखांत होना प्रीतिकर रहा। जल्दी किसी पत्रिका में नाटक पढ़ने को नहीं मिलते, लेकिन इस अंक में हँसा मारने वाली बहुत बढ़िया हास्य नाटिका है 'मुहावरों से अनोखा न्याय'। इस नाटिका के मंचन के अगणित अवसर हैं। छोटे से लेकर बड़े बच्चों के स्कूल-कालेजों में इसका मंचन मज़ेदार और शिक्षाप्रद होगा। इसकी लेखिका स्नेहलता दीक्षित जी को बधाई! अन्य रचनाएँ भी स्तरीय और पठनीय हैं। पुरोधा साहित्यकार बालकृष्ण भट्ट की लघुकथा 'दिल बहलाव' अद्भुत रही। शुभकामनाएँ!

—केशव शरण (वाराणसी)

आपके कुशल संपादकत्व में निरंतर प्रकाशित हो रही साहित्यिक पत्रिका हिन्दी जगत का नया अंक मिला। महत्वपूर्ण साहित्यिक सामग्री से समृद्ध यह अंक विशिष्ट बन पड़ा है।

गीतकार गोपाल दास नीरज पर केंद्रित आपका संपादकीय ज्ञानवर्धक और अंतरंग प्रसंगों से सज्जित है। कई नयी बातें हैं। नीरज के कवि रूप पर प्रदीप सरदाना का लेख अनेक नई जानकारियों से लैस है। संजीव श्रीवास्तव का लेख 'बुनियाद और हम लोग' सीरियल पर चर्चा प्रासंगिक है। अर्चना पैन्यूली ने गांधी को विश्व में जीवित एक ज्योति के रूप में विश्लेषित किया है। अच्छा आलेख है। हम जिंदा हैं (शैलजा सक्सेना) यथार्थवादी कहानी है। बड़ी गहराई से समय और समाज को देखने की कोशिश की गई है। सुषमा मुनीन्द्र की कहानी भी मन को रमाती है।एक नये पहलू, नयी कथाभूमि की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करती है। इंतजार हुसैन की उर्दू कहानी का खुर्शीद आलम का रूपांतरण पीले पत्ते, विजय सती का संस्मरण, लघुकथा धैर्य तथा कविताएं और अन्य सामग्री स्तरीय और समसामयिक जीवन से जुड़ी हुई है।

कुल मिलाकर यह अंक स्तरीय और महत्त्वपूर्ण है। संपादक की चयन दृष्टि श्लाघनीय है।

—अनाम पाठक
दिल्ली

'हिंदी जगत' का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ। इसे स्नेहपूर्वक भेजने के लिए हृदय से आभार। यह अंक वास्तव में ज्ञान, साहित्य और विचारों की समृद्ध धारा का सुंदर समन्वय प्रतीत होता है। इस अंक का संपादकीय भी विशेष रूप से मन को स्पर्श करता है। इसमें हिंदी साहित्य की गौरवपूर्ण परंपरा तथा महान रचनाकारों के योगदान को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से दर्शाया गया है। साथ ही यह नई पीढ़ी को भाषा, संस्कृति और साहित्यिक मूल्यों से जुड़ने की प्रेरणा भी प्रदान करता है।

यह अंक गंभीर चिंतन, साहित्यिक संवेदना और रचनात्मक अभिव्यक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण प्रतीत होता है। इसके लिए संपादक मंडल एवं समस्त सहयोगी बधाई के पात्र हैं।

इस अंक में प्रकाशित 'प्रेमचंद की रचनाओं की प्रासंगिकता' शीर्षक लेख विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करता है। इसमें स्पष्ट किया गया है कि प्रेमचंद का साहित्य केवल अपने समय की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि आज के समाज की वास्तविकताओं से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। उन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों में किसानों, मजदूरों, महिलाओं तथा वंचित वर्गों के संघर्ष, पीड़ा और सामाजिक विषमताओं को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ उद्घाटित किया है।

—शुभी त्रिपाठी
लक्ष्मी नगर, दिल्ली 110092

सम्पादकीय

इक्कीसवीं शताब्दी का यह तीसरा दशक विश्व के सामने अनेक तरह की चुनौतियाँ लेकर उपस्थित है। जो परिवर्तन पहले शताब्दियों में होते थे, बीसवीं शताब्दी में दशकों में होने लगे और अब तो ये परिवर्तन हर दो-तीन साल में होने लगे हैं। नए मनुष्य की बौद्धिक-क्षमता ने पिछली पीढ़ी के बौद्धिक एवं भावनात्मक आधार को ध्वस्त कर दिया है। अब न जाने कितने काम इंटरनेट के आधार पर होने लगे हैं। कोरोना की आपदा से पहले और बाद से स्मार्ट फोन से हर तरह की शॉपिंग, पेमेन्ट, यात्रा के लिए टिकट की खरीद, गूगल मैप से रास्ते की खोज, व्हाटसऐप से ऊबर-ओला, टैक्सी की बुकिंग जैसे हजारों काम घर बैठे होने लगे हैं। घर से ही ऑफिस के काम करने का चलन बढ़ रहा है। और तो और बच्चों की पढ़ाई लिखाई भी ऑन लाइन होने लगी है। व्यक्तिगत सम्पर्क और सस्पर्श के अवसर लगातार क्षीण हो रहे हैं। ऊपर-ऊपर से तो यही लग रहा है कि यह सब मनुष्य की बेहतरी के लिए हो रहा है लेकिन अपने सूक्ष्मतर स्तर पर यह अन्ततः मनुष्य विरोधी परिस्थितियाँ हैं।

आज इन सारी सुविधाओं को भोगने वाला मनुष्य धीरे-धीरे अकर्मण्यता, हताशा, अवसाद जैसे अनेक प्रकार की शारीरिक व्याधियों से ग्रस्त होता जा रहा है और इस सबके निदान के लिए उसे भारी रकम खर्च करने के लिए विवश होना पड़ रहा है।

सन् 1990 से पूर्व भारत के हर गली-मोहल्ले में डॉक्टर, वैद्य, हकीम, हड्डी बैठाने वाले पहलवान, दर्जी, किराने का सामान बेचने वाली दुकानें जैसी अनेक प्रकार की सुविधाएँ कम लागत पर मिल जाया करती थीं। केवल बड़ी-बड़ी बीमारियों के लिए अलग-अलग किस्म के हॉस्पीटल थे। लेकिन खाँसी, जुकाम, बुखार या छोटी-मोटी चोट के इलाज आस-पास हो जाया करते थे। लेकिन अब परिदृश्य बदल गया है।

1990 के बाद से यानि जबसे उदारीकरण का दौर आया है तब से जीवन के लगभग सभी महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए बीमा कम्पनियों की शरण में जाना अनिवार्य हो गया है। भारत में बीमा कम्पनियों के कारोबार के आँकड़े आसमान छू रहे हैं। आज लगभग हर व्यक्ति को जीवन, कार, स्वास्थ, घर, यात्रा जैसी प्रत्येक गतिविधि के लिए बीमा कराना अनिवार्य होता जा रहा है। जरा-सी खाँसी जुकाम का इलाज कराने के लिए गली-गली खुल गए तथाकथित सुपर स्पेशिलियटी वाले क्लीनिक या हॉस्पीटल में जाना होता है और किसी भी प्रकार के निदान से पहले हजारों रुपये के पैथोलॉजिकल टेस्ट कराने अनिवार्य होते जा रहे हैं।

जो लोग बड़ी-बड़ी नौकरी करते हैं, जिन्हें मोटे-मोटे वेतन मिल रहे हैं, उनके लिए यह बहुत मुश्किल नहीं है लेकिन एक सामान्य व्यक्ति कहाँ जाए? यों तो उसके लिए सरकार ने कई तरह की आयुष्मान भारत जैसी योजनाएँ चला दी हैं लेकिन अप्रत्यक्षरूप से यह सब राशि भी छोटे-छोटे इलाजों के मोटे-मोटे बिल बनाकर उन्हीं लोगों की जेब में चली जाती है जो इस सरकारी तंत्र को भेदना जानते हैं। इस पैसे को हड़पने के लिए अनेक लोगों के ऐसे आपरेशन भी कर दिए गए हैं, जो बीमारी उन्हें थी ही नहीं। दुर्भाग्य यह है कि उनके इस कुकृत्य से किसी व्यक्ति को जीवन भर की यातना मिल जाती है लेकिन जिन्होंने यह कुकर्म किया है, वे दिन-रात अपना खेल जारी रखे हुए हैं। उन्हें किसी भी प्रकार की सजा नहीं मिलती है। 'हिन्दी जगत' के इस अंक में इस बिडम्बनापूर्ण स्थिति का यथार्थ प्रस्तुत करने वाली कई कहानियाँ सम्मिलित की गई है।

लेकिन इस यथार्थ स्थिति से भी बड़ी समस्या मानव-चरित्र के नैतिक पतन की है। यदि अन्ततः सब कुछ पैसे पर ही आधृत हो जाएगा तो मानवीय मूल्यों का दया, धर्म, करुणा, ममता, त्याग, अपरिग्रह का क्या होगा? उसकी आस्था और विश्वास का क्या होगा? जब मानव जीवन के प्रेरक मूल्यों की भित्ति ही ढहती जा रही है तो मनुष्य मात्र की जीवनी-शक्ति का आधार भी नहीं बचेगा। अब आर्टीफिशियल इन्टीलिजैन्स (कृत्रिम मेधा) का युग आ गया है। ए.आई. अब हमारे जीवन के हर पहलू को अनुशासित कर रही है या करेगी। ए.आई. संचालित रोबोट सब काम करने लगेंगे।

पिछले दिनों जापान यात्रा के दौरान मैंने देखा कि वहाँ रेस्तुराओं में वेटर्स का काम रोबोट्स करते हैं। इसके अतिरिक्त हरेक टेबुल के साथ जुड़ी स्वचालित पटरीनुमा सप्लाई चेन ने भी वेटर्स का काम ले लिया है। खाने पीने का आर्डर भी हर मेज पर लगे मॉनीटर के माध्यम से दिया जा रहा है। अर्थात न जाने कितने व्यक्तियों को नौकरी पर रखने की जरूरत ही नहीं रह गई है।

जापान जैसे देशों के लिए इसकी अनिवार्यता समझ में आती है क्योंकि वहाँ कामगारों की संस्था निरंतर घट रही है। लेकिन भारत जैसे देशों में तो हजारों हाथों से काम छूट जाएगा। चूँकि वे महत्त्वपूर्ण वोट बैंक के हिस्से हैं तो सरकारी अनुदानों के सहारे उनका पालन पोषण किया जाता रहेगा लेकिन अकर्मण्यता और आलस्य का प्राधान्य मानव जीवन की अर्थवत्ता को खा जाएगा। मनुष्य जीवन में सफलता आने लगेगी लेकिन उसकी सार्थकता तिरोभूत हो जाएगी। लगता है कि आगामी समय में मनुष्य-मनुष्य के बीच संवाद के सेतु टूटते चले जाएँगे और उसका जीवन रोबोट के चलाए चलेगा। लेकिन एक काम ऐसा है जो रोबोट नहीं कर पाएगा। वह उसके सुख-दुःख उसकी हँसी और आँसुओं का साझीदार नहीं बन पाएगा। ऐसा मेरा विचार है।

बहरहाल, वर्ष 2026 का यह पहला अंक आपको समर्पित है।

नया साल : सात कविताएँ

❑ विनोद खेतान

1

कहीं वक़्त थमकर
पलटकर जो देखे
गये साल के आइने में सिमटकर
तो वह ढूँढ़ लेगा
वो सारी कशिश
जो हमारी तुम्हारी हँसी में छिपी है
वो ग़म के बबूले
फ़लक पे जो सहरा के रुक-से गये हैं
वो आँखों के कोरों पर भीगी-सी हसरत
वो बातें जो अब तक कही जा सकीं ना
वो सपने जो थम से गये शाम को ही
वो ग़ज़लें जो मतले से आगे बढ़ीं ना
वो जुंबिश जो लफ़्ज़ों में आयी ना लब पे
वो बेगानापन जो फ़ज़ाओं में फैला
वो दुनिया के मसले
वो पेचीदा बातें
वो मुश्किल-से लमहे
वो खोयी-सी रातें
वो मौसम के लम्बे थपेड़ों की दहशत
वो दुनिया में बिखरी-सी अनजान वहशत
वो मासूम-सा डर हवाओं में पसरा
वो तेरा तग़ाफ़ुल
वो तनहाई मेरी
वो लम्बी उदासी
वो छोटी उम्मीदें—
ये सारा समाँ अब सिमटने को आया
नये साल की अब ये ताज़ा सुबह है
उम्मीदों की लम्बी चहलकदमी करता
नये साल का ये नन्हा मुसाफ़िर
फ़क़त चल पड़ा है!

2

वैसे तो हर बार आता है नया साल
पर यों ही तो नहीं तारीख़ें बदली जाती हैं
तो हम क्यों कर गठरी लादें गुज़रे पल की
चलो साथ चलें
और करें मुबारक नया साल।

3

कुछ ख़्वाबों ने पन्ने पलटे
कुछ मौसम ने अँगड़ाई ली
कुछ धुँधले पल पीछे छूटे
कुछ धूप खिली और आँख खुली
तुम ख़्वाब में थे और सामने भी
मैं भी जैसा था वैसा हूँ
बस एक लिबास का अन्तर है
और वक़्त की जुंबिश पर उभरा
एक लफ़्ज़ नया
एक साल नया।

4

कुछ तो होता होगा
आवाज़ में दर्द की तरह
काँपते होंगे कुछ पल
जब सो जाता है
पिछले साल का आखिरी दिन
और सुबह की ओस से
धीरे-धीरे उड़ती है नमी तो
नए साल का सूरज
कुछ तो कहता होगा—

सुनो
मैंने अभी-अभी सुना
सूरज
रोशनी से कह रहा है
जगाओ सबको
और
भगाओ अँधेरों के अतीत को
क्योंकि इस साल की आमद
हुई है
उसके अपने दिन के साथ।
आओ मनाएँ नया साल
इस रविवार को।

5

वैसे तो हर पल नया आता है
और फिर गुज़र भी जाता है
पर ये उम्मीद लाती है
होठों पर मुस्कुराहट
कि आनेवाला साल
होगा ख़ुशनुमा,
अलग और ख़ूबसूरत
नए साल के आग़ाज़ पर
इस उम्मीद की ख़ुशी में
और इस ख़ुशी की उम्मीद में
आप भी शामिल हैं!

6

अभी-अभी तो आयी थी यह नई सदी,
पच्चीस साल ऐसे गुज़रे
कि पलकें झपकीं, छब्बीस आया!

फ़िक्र लगी है,
जंग छिड़ी है, कुहरा छाया-

फिर भी है उम्मीद कि अब
दुनिया के झंझावातों में
नया साल बस जादू कर दे!

आप हमारी दुनिया में हैं -
नये साल में,
आएँ मिलकर ख़ुशियाँ भर दें!

7

समय सत्य है
बाकी सब तो उपादान हैं
सागर के विस्तृत वैभव में
नन्हीं बूँदों के समान हैं।

नये वर्ष की तेजस किरणें
बूँदों की आभा बन जाएँ
जीवन के झंझावातों में
जिजीविषा का मार्ग दिखाएँ! ❑

बी-29, तीसरी मंजिल,
साउथ एक्सटेंशन पार्ट-2, नई दिल्ली
binodkhaitan@hotmail.com

एक कला है कविता-पाठ

▫ आचार्य विष्णुकांत शास्त्री

मैंने जो विषय चुना है यह सुनने में थोड़ा अटपटा लग सकता है 'काव्य का वाचिक सम्प्रेषण'। मैं इसकी थोड़ी व्याख्या करूँगा और फिर इसके माहात्म्य पर अपनी बात रखूँगा। कोई व्यक्ति किसलिये लिखता है? स्वान्तः सुखाय एक शब्द है। स्वान्तः सुखाय तुलसीदास ने भी लिखा है, परन्तु उनकी कविता में गम्भीर अर्थ भी हैं। उन्होंने अंतः सुख के लिये और परमार्थ सुख के लिये कविता लिखी। लेकिन बहुत बार लोग कहते हैं मैंने अपने सुख के लिये कविता लिखी है। ठीक है तो अपने सुख के लिये जो कविता लिखी है उसको प्रकाशित क्यों कराते हैं, दूसरों को क्यों सुनाते हैं? स्वाभाविक रूप से कविता में यह बात निहित है कि मैं अपनी बात दूसरों तक पहुँचाना चाहता हूँ।

भारतीय काव्य शास्त्र में श्रव्य काव्य और दृश्य काव्य- दो भेद हैं। दृश्य काव्य हम नाटकों को कहते थे और नाटक के अन्तर्गत भी उसके अनेक भेद होते थे-आंगिक, वाचिक, आहार आदि। नाटक में जो अभिनय होता है, जो साज-सज्जा होती है, जो श्रृंगार होता है। उसके बाद वाणी के द्वारा जो संवाद होता है उसी से प्रेषणा ज्यादा होती है। उसको कहते हैं वाचिक। लेकिन दूसरे समस्त काव्य को हमने श्रव्य काव्य कहा, यानि जो काव्य सुना जाय, कोई उसे पढ़े और हम उस पढ़े हुए काव्य को सुनें। इसलिये इसको श्रव्य काव्य भी कहते थे।

आधुनिक युग में जब छपाई का यंत्र, मुद्रण यंत्र आया तो कवितायें छपने लगीं और छपी हुई कविताएँ मौन वाचन के लिए व्यवहृत होने लगीं। यह ठीक है कि पहले बहुत अच्छे कवि सम्मेलन होते थे, मुशायरे भी होते थे, उसमें कवियों द्वारा कविताएँ पढ़ी जातीं और बुद्धिमानों के द्वारा सराही जाती थीं। लेकिन धीरे-धीरे कवि-सम्मेलनों का, मुशायरों का हाल बड़ा खस्ता हो गया। आज के कवि-सम्मेलनों में या तो मोटे स्तर की हास्य कवितायें जमती हैं या कोई बड़े जोर से चिल्लाकर देश-भक्ति की बात कहे तो वह जम जाता है। कवि-सम्मेलन के जो मंचीय कवि हैं, वे गम्भीर कविता से जैसे कट गये हैं। और जो गम्भीर कविता लिखते हैं उनकी काव्य-गोष्ठी बहुत कम होती हैं। परिणाम यह होता है कि लिखी जा रही अधिकांश कविताएँ या तो पत्र-पत्रिकाओं में या कविता संकलनों में हैं और उसमें जो कविता सम्प्रेषित होती है, उसमें थोड़ी कमी आ गई है। लिखी जा रही अधिकांश कविताएँ या तो पत्र-पत्रिकाओं में या कविता संकलनों में हैं।

यह कमी क्यों आ गई और कैसे कविता में थोड़ी सी क्षति हई है, इसकी ओर भी आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता है।

शब्दों के दो गुण होते हैं- एक होता है अर्थ और एक होता है नाद। शब्द का जो दूसरा गुण है नाद, यह बोलने पर उभरता है। मौन वाचन के लिये, चुपचाप पढ़ने के लिये जो कविताएँ लिखी जाती हैं, उनमें अर्थ गम्भीरता हो सकती है, लेकिन चूंकि वह पढी नहीं जायेगी इसलिए उसमें शब्द का जो नाद सौन्दर्य है वह उभारा नहीं जाता अथवा उभरता नहीं है। शब्द के जो दोनों गुण हैं अर्थ और उसका नाद, जब वाचिक सम्प्रेषण होता है, जब उसका पाठ किया जाता है तब कवि दोनों तरफ सावधान रहता है। और जब पाठ नहीं किया जाता और कविता पढ़कर नहीं सुनाई जाती, केवल आँखों से देखकर पढ़ी जाती है, उसमें नाद सौन्दर्य की क्षमता कम होती है।

आप इस बात पर ध्यान दीजिए। आधुनिक हिन्दी कविता में अगर किसी ने नाद सौन्दर्य पर सबसे अधिक ध्यान दिया है तो निराला ने दिया है। आप लोगों में से कितनों ने निराला को कविता पाठ करते सुना है? मेरा सौभाग्य है कि मैंने उनको बहुत बार सुना है। एक दूसरी बात यह है कि आज के अधिकांश कवियों को अपनी ही कविता याद नहीं रहती। कविता ऐसे पढ़ते हैं कि जैसे घास छील रहे हों। जब तक आप अपनी कविता को स्वयं कंठस्थ नहीं करेंगे और जब तक आप अपनी कविता को सुनाने का अच्छी तरह अभ्यास नहीं करेंगे तब तक आपका वाचिक सम्प्रेषण प्रभावशाली नहीं होगा।

भारतवर्ष काव्य पाठ के सम्बन्ध में बहुत विकसित दृष्टि रखता था। संस्कृत के एक बहुत बड़े आचार्य थे। उनका नाम है राजशेखर। राजशेखर की एक पुस्तक का नाम है 'काव्य मीमांसा'। इसमें उन्होंने केवल काव्य पाठ पर लिखा है। वे कहते हैं कि अगर कोई सुसंस्कृत व्यक्ति है तो वह किसी न किसी तरह कविता तो लिख ही लेगा। यानी कविता लिखने में क्या बहादुरी है? किन्तु पढ़ना तो वही जानता है जिसे सरस्वती सिद्ध होती है। यानी राजशेखर यह कह रहे हैं कि कविता लिखने से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण कविता को ठीक तरह से पढ़कर सुनाना है।

कविता को ठीक ढंग से पढ़कर सुनाने की बात बहुत महत्त्वपूर्ण है। कविता केवल गाने के लिए नहीं है। बहुत से लोग गाकर कविता सुनाते हैं। कविता गीत से कुचल दी जाती है। कविता की एक विधा है गीत, उसको गा भी लीजिए। लेकिन गीत और संगीत में बहुत अन्तर है। गीत भी भाव के अनुरूप ही होना चाहिए। उर्दू में एक शेर है-

हमने तो यह समझा था कि कुछ शेर सुनाओगे।
तुम गाने लगे गाना, लाहौल विलाकूवत!

यानी कविता को कैसे पढ़ा जाय यह बात समझ में आनी चाहिए। जब तक काव्य पाठ की परम्परा शिक्षा से प्राप्त न हो उसका अभ्यास न हो, अनुशीलन न हो, तब तक काव्य पाठ विकसित नहीं होता। अच्छा काव्य पाठ वही कर सकता है जो काव्य का वाचन करते समय, कविता को सुनाते समय यह अनुभव करे कि यह कविता मेरी है। उस कविता के प्रत्येक भाव का, उसकी संवेदना का उसको भीतर से

अनुभव होना चाहिए, उसको वह कविता जीनी चाहिए।

आप लोगों ने नाटक देखा होगा। नाटक अच्छा कैसे लिखा जाता है ? नाटक अच्छा कैसे होता है ? नाटक अच्छा कौन करता है ? नाटक किसका होता है ? लेखक का तो केवल नाट्य आलेख है। नाटक का उसमें जो ढाँचा दिया है, वह नाटक नहीं होता। जो नाटक मंच पर प्रस्तुत किया जाता है वह नाटक है। और जो नाटक मंच पर प्रस्तुत है वह नाट्यकार का नहीं होता, वह नाट्य निर्देशक का होता है, वह अभिनेता का होता है।

आप एक बात को समझ लीजिए। अगर जयशंकर प्रसाद के 'स्कन्दगुप्त' या मोहन राकेश के 'लहरों का राजहंस' नाटकों का निर्देशन पाँच नाट्य निर्देशक कर रहे हैं तो क्या पाँचों एक तरह से करते हैं ? नहीं, पाँचों पाँच तरह से करते हैं। यानि पाँचों नाट्य निर्देशक एक ही नाटक को पाँच तरह से मंचित कर रहे हैं। पाँचों तरीके नाट्य निर्देशक के हैं जिसकी आज्ञा मानकर अभिनेता काम कर रहे हैं। अत: कोई भी प्रस्तुत किया गया नाटक, नाट्यकार से ज्यादा नाट्य निर्देशक का होता है। वैसे ही अच्छे काव्य पाठ की पहली शर्त यह है कि जो कविता आप सुनाने जा रहे हैं उस कविता को आपने जिया हो। जब तक कविता का भाव आपके हृदय में स्फूर्तित नहीं हुआ है, जब तक आपने उसका अनुभव नहीं किया है तब तक आप दूसरों को उसका अनुभव नहीं करा सकते।

दूसरी बात यह कि काव्य पाठ अगर आप कागज देखकर करेंगे तो आधा रस नष्ट हो जायेगा। मैं बोल रहा हूँ, आपकी आँख में झाँककर बोल रहा हूँ। बहुतों को लगता होगा कि मेरी आँख उनकी आँख से टकरा गयी है, लगता है कि नहीं ? अगर मैं देख-देखकर पढ़ूँ तो उसका आधा रस नष्ट हो जायेगा। यह जो सीधा सम्प्रेषण है, जिसकी आँख से मेरी आँख टकराती है, उसको अनुभव हो रहा है कि मैं उसे देख रहा हूँ और मैं भी देख रहा हूँ कि उसका स्वरूप कैसा है। मेरी बात सुनकर उसको अच्छा लग रहा है या बुरा लग रहा है। मुस्कुराहट आ रही है कि नहीं, सर हिल रहा है कि नहीं, उसकी एकाग्रता बढ़ गयी है कि नहीं। यह मुझको पता लग रहा है। यह जो साक्षात लेन-देन की बात है, जो पारस्परिक आदान-प्रदान चल रहा है यह तभी चल सकता है जब सुनाई जाने वाली कविता का मैंने अनुभव भी किया हो तथा वह कविता मुझको कंठस्थ भी हो। साथ ही उस कविता के भाव के अनुरूप मेरा स्वर भी हो।

कविता अनेक प्रकार की होती है। कोई गम्भीर है, कहीं गुदगुदी है, कहीं बातचीत है, कहीं व्याख्यान शैली है, कहीं गम्भीर चिन्तन है। सब धान बाइस पसेरी नहीं होता। हर कविता का अलग-अलग वाचन होना चाहिए। भाव के अनुरूप वाचन होना चाहिए। भाव के अनुरूप स्वर का आरोह-अवरोह होना चाहिए। भाव के अनुरूप रुकना चाहिए, भाव के अनुरूप तीव्रता बढ़ जानी चाहिये। काकु क्या है ? काकु पढ़ने का ढंग है, जिससे उसका अभिप्राय स्पष्ट हो। छकड़ अक्षरों में अभिप्राय स्पष्ट नहीं होता है। अब एक छोटा उदाहरण है। एक शब्द है 'आना'। आना का क्या मतलब है, एक क्रिया का नाम है। आना शब्द जब बोला जाता है तब उसका भाव तटस्थ होता है, लेकिन किस सन्दर्भ में बात कही जा रही है यह उसके उच्चारण की ध्वनि से स्पष्ट होता है। मैं उच्चारण करके बता रहा हूँ - आना-आना-आना। एक ही आना शब्द है कि नहीं। जब कहा आना, तो मतलब है आदेश। जब कहा आना, तब मतलब हुआ कि बहुत अनुरोध है, प्रेमपूर्वक आना। जब कहा आना तो मतलब है कि तुम्हारी इच्छा है आओ या न आओ। जब कहा आना तब चुनौती है, आओ बच्चू देखें कैसे आते हो ? अब आना शब्द एक ही है। क्या इस आना शब्द का अर्थ छपी हुई पंक्ति में इस प्रकार स्पष्ट हो सकता है कि वह आदेश है या अनुरोध या कि वह चुनौती है, या आज्ञा। यह जो वाचिक सम्प्रेषण है, यह जो भाव के अनुरूप पढ़ा गया शब्द है, यही पढ़ा गया शब्द अपना अर्थ प्रकट करता है। जो बात शब्दों से कही जाती है, वह बहुत कम कही जाती है। शब्द से कहीं अधिक संकेतों से बहुत ज्यादा बात कही जा सकती है। एक हिचकी एक तरफ और चार पृष्ठ का वक्तव्य एक तरफ। एक हिचकी शब्दों से कहीं ज्यादा सम्प्रेषित कर सकती है।

मैं पहले एक-दो सरल कविताएँ सुनाऊँ, जिससे कि आपको अपने साथ ले चलूँ। कविता शिवमंगल सिंह सुमन की है :

जिन्दगी तो मिल गई, चाही कि अनचाही
इस सफर में तुम कहाँ से मिल गये राही।
ठीक है दो क्षण हमारे कट गए लेकिन
तार सुधियों के हमारे बँट गये लेकिन
हर क्षणिक तूफान की छाया सँवरती है
दो घड़ी की भेंट बरसों तक अखरती है।
आ गयी मंजिल तुम्हारी, जा रहे हो क्या
और जाने के समय मुस्का रहो हो क्या
आँख मुस्काये तुम्हारी बात तब जानूँ
डगमगाती नाव की पतवार पहचानूँ
खैर यह मुस्कान बाँधे ले रहा हूँ मैं
साधना की साध साधे ले रहा हूँ मैं
जिन्दगी तो मिल गई, चाही कि अनचाही
इस सफर में तुम कहाँ से मिल गये राही।

अब यह कविता किसी से ऐसा सम्बोधन है, जो बिछुड़ रहा है और उसके साथ अपने प्रेम का, अपने सम्बन्धों का, अपने रिश्तों का, निरीह और पीड़ा भरा बखान कर रही है। यह कविता मौन वाचन से जितनी समझ में आती है, उससे ज्यादा अगर बेहतर ढंग से पढ़कर सुनाई जाये तो समझ में आती है। दुनिया के सब बड़े-बड़े कवि यह अनुभव करते हैं कि केवल पढ़ी गई कविता आधे से अधिक व्यर्थ चली जाती है। इसलिए ठीक ढंग से सुनाई गई कविता का अलग प्रभाव पड़ता है।

कविता का भाव सिर्फ शब्द ही वहन नहीं करते हैं। शब्द को उच्चरित करने, शब्द को पढ़ने का ढंग भी भाव को व्यक्त करता है। एक कविता मैं 'अज्ञेय' की सुनाता हूँ—

खुल गई नाव घिर आई सन्ध्या,
सूरज डूबा सागर तीरे
धुंधले पड़ते से जल पक्षी
साहस भरकर मूक लगे मँडराने
सूना तारा उगा गगन में साथी लगा बुलाने
तब फिर सिहरी हवा लहरियाँ काँपी

तब फिर मूर्च्छित व्यथा विदा की
जागी धीरे-धीरे
खुल गई नाव घिर आई सन्ध्या,
सूरज डूबा सागर तीरे।

पहली बार में लगता है यह शायद चित्रण है एक नाव खुल गई, सन्ध्या घिर आई और सूरज डूब गया। क्या केवल इतना ही कहा! आगे की पंक्तियाँ सुनें। 'धुंधले पड़ते से जल पक्षी साहस भरकर मूक लगे मँडराने'। कोई घटना घटी है, जिससे वातावरण तो धुंधला है लेकिन कुछ ऐसी बात घटी है, जिसको झेलने के लिये साहस की जरूरत है। सूना तारा उगा गगन में साथी लगा बुलाने। उगा हुआ पहला तारा अकेला है। अकेलापन सहा नहीं जा रहा है साथी को बुला रहा है। तब फिर सिहरी हवा लहरियाँ काँपी। तब फिर मूर्च्छित व्यथा विदा की जागी धीरे-धीरे। किसी के विदा हो जाने पर जो आघात लगा है, वह इतना कड़ा है कि वह मूर्च्छित हो गया है। व्यथा मुच्छित है। जब तारा अपने साथी को बुलाता है, जब लहरियाँ काँपती है, तो वह मूर्च्छित व्यथा जागती है। तब लगता है केवल नाव ही नहीं खुली है, उस नाव में कवि का कोई अत्यन्त प्रिय चला गया है। कवि के अपने जीवन में उदासीन पीड़ा, व्यथा की अंधियारी छा गयी है। केवल बाहर का सूरज ही नहीं ड्बा है, जीवन के सुख का भी सूरज डूबा है। ये सारे भाव कविता पढ़ने के ढंग के साथ-साथ व्यक्त होते हैं। कविता के शब्दों में जो विशेषता है उसको उभारने की चेष्टा है।

कविता के भाव को कैसे सम्प्रेषित किया जाए? सुनने वाले के मन तक उसे कैसे पहुँचाया जाए? काव्य-पाठ के जरिये यह संभव है। लेकिन काव्य पाठ इतना आसान नहीं है कि आज हमने काव्य-पाठ करना शुरू किया और बढ़िया काव्य पाठ कर लिया। बहुत लम्बी साधना के बाद यह सम्भव हो पाता है। काव्य-पाठ को हमारे हिन्दी क्षेत्र में उपेक्षित कर दिया गया है। मैं यह मानता हूँ कि हम अगर कविता को सामान्य जन तक पहुँचना चाहते हैं तो हमें काव्य-पाठ की प्रक्रिया को पुनः जागृत करना चाहिये। कवि सम्मेलन ही काव्य-पाठ नहीं है। लेकिन वास्तविक काव्य-पाठ कविता के भाव को शब्दों के द्वारा, उसके आरोहण के द्वारा ही सम्भव होता है। कुँवर नारायण की एक कविता सुना रहा हूँ :

'कोई दुख मनुष्य के साहस से बड़ा नहीं
वही हारा, जो लड़ा नहीं।'

अब देखिये, कोई दुख - मैं जानबूझ कर 'कोई' को लम्बा कर रहा हूँ। इसका मतलब सब के सब दुःख। मनुष्य के साहस से बढ़कर कोई दुःख नहीं है। कितना भी बड़ा दुःख क्यों न हो, हम उसे झेल सकते हैं। कोई दुःख मनुष्य के साहस से बड़ा नहीं, वही हारा... । जरा रुकता हूँ, जानबूझ कर रुका हूँ, जिससे आपकी जिज्ञासा तेज हो कि कौन हार गया भाई? वही हारा, जो लड़ा नहीं। छोटी सी पंक्तियाँ हैं। जो बात कवि आप तक पहुँचाना चाहता था उस बात को शब्दों के माध्यम से तो पहुँचाने की चेष्टा तो कर ही रहा है। उसमें स्वर जुड़ जाय, उसमें अगर काव्य पाठ का ठीक ढंग जुड़ जाय तो कैसे-कैसे भाव संक्रमित होता जाता है।

श्रीकांत वर्मा की एक कविता है। देखिये कविता पढने का ढंग कैसे अलग हो जाता है -

चाहता तो बच सकता था
मगर कैसे बच सकता था
जो बचेगा कैसे रचेगा।

पहले मैं झुलसा फिर धधका
चिटकने लगा, कराह सकता था
मगर कैसे कराह सकता था
जो कराहेगा कैसे निबाहेगा।

आप सोचिये, चाहता तो बच सकता था। कोई बड़ा काम करते हैं तो उसमें परिश्रम होता है, तपस्या होती है, वह भार झेलना पड़ता है, तो कई बार इच्छा होती है-कहाँ फँस गया, बच जाते। चाहता तो बच सकता था, मगर कैसे बच सकता था। तुम अगर जीवन की चुनौतियों से बचते ही रहोगे भाई तो रचना कैसे रचोगे ? यानी यह कविता हमको प्रेरणा देती है कि बड़ी से बड़ी तकलीफ को सहते हुए चुपचाप होठ सीकर काम करते रहो, झेलते रहो-

हम चले ही क्या, जरा देखें अगर उनको
जा रहे जो मौन, पर्वत पीठ पर लादे !

हम थोड़ा सा काम करते हैं, ढिंढोरा पीटने लगते हैं। ऐसे लोग भी हैं जो पहाड़ को पीठ पर लादकर चुपचाप चले जा रहे हैं।

कविता आपके लिये शौक की चीज है। कविता आपके लिये मनोरंजन की चीज है। यह कविता के लिये बहुत घटिया दृष्टिकोण है। दृष्टि अगर बड़ी नहीं होगी तो दृश्य भी बड़ा नहीं होगा। कौन सी दृष्टि लेकर आप कविता के पास आ रहे हैं। अगर आप कविता के साथ जुड़ रहे हैं अपने जीवन को चरितार्थ करने के लिये; अगर आप कविता के साथ जुड़ रहे हैं प्रेरणा प्राप्त करने के लिये, तो कविता के साथ आपका जो रिश्ता होगा वह दूसरी भूमिका का होगा और वह दूसरी भूमिका आपको अच्छी और बड़ी कवितायें दीर्घ नहीं, लम्बी नहीं- श्रेष्ठ और ऊँची कविता पढ़ने की प्रेरणा देगी।

बड़ी कविता एक बार में समझ में नहीं आती है। बड़ी कविता आपकी परीक्षा लेती है-आपकी विद्वत्ता की, आपकी बुद्धि की, आपके धैर्य की, आपके जीवट की, और तब वह अपना अर्थ खोलती है। बड़ी कविता साधारण आदमियों के सामने अपना अर्थ नहीं खोलती है। बड़ी कविता में एक बड़े कवि के सारे जीवन की साधना उभर कर आती है। उसके लिये आपको भी पात्रता अर्जित करनी चाहिए।

हम लोग यह मानते हैं कि कविता वही समझ सकता है जो सहृदय होता है। सहृदय का आजकल अर्थ होता है जो कि बड़ा संवेदनशील हो। लेकिन इसका केवल इतना अर्थ नहीं है। सहृदय का अर्थ होता है समान हृदय वाला। कवि के हृदय के साथ जो अपना हृदय जोड़ सकता है वही कविता को समझ सकता है। सहृदय का अर्थ होता है प्रशस्त हृदय वाला। क्योंकि एक कवि एक विशेष ढर्रे पर कविता करता है। पाठक को जो साधना करनी चाहिये वह आवश्यक है।

अच्छा आप दूसरी कलाओं की ओर ध्यान दीजिये। चित्रकला के लिये आप क्या करते

हैं? जो आपके मन में आता है, वह आपकी कूची के साथ रंग से कागज पर उतरता जाता है। मूर्तिकला के लिये क्या करते हैं? आप छेनी हथौड़ा लेकर उसको गढ़ते हैं। संगीत के लिये क्या करते हैं? कितना अभ्यास करते हैं? और काव्य पाठ के लिये चाहते हैं कि ऐसे ही हो जाय, तो ऐसे नहीं होगा। यानी बड़ी कला आपकी कर्मेन्द्रियों को आकृष्ट करती है और एक चुनौती देती है कि अपनी कर्मेन्द्रियों के द्वारा ही इसको समझने की चेष्टा करो, केवल मन के द्वारा नहीं।

काव्य पाठ के प्रति यह बड़ी दृष्टि रखकर जब हम उसके साथ जुड़ते हैं तब कविता का मर्म समझ में आता है। बड़ी कविता को, अच्छी कविता को जिस विनम्रता के साथ और उसकी संवेदनशीलता के साथ समझने और पढ़ने का अनुभव होना चाहिये, वह आपके काव्य पाठ में उभर कर आती है। काव्य पाठ में पूरी की पूरी चेतना उभर कर आती है। जो कविता के मर्म को समझता नहीं है, वह उसको अच्छे ढंग से पढ़ नहीं सकता है। इसलिये मैं यह मानता हूँ कि हमारे कवियों को इस दिशा में कुछ ध्यान देना चाहिये।

मैं दो प्रकार की कविताएँ आपको सुना रहा हूँ। लगातार सुनाता हूँ- कुछ छन्दबद्ध हैं और कुछ मुक्त छंद में। छंदबद्ध कविताओं की पंक्तियाँ निर्धारित होती हैं, मुक्त छंद अपने में एक विरोधाभाषी शब्द है। छंद जो आच्छादित करे, छंद जो हमको गीत से आह्लादित करे- लेकिन जो एक निश्चित लय का हो। छंदों की लय निश्चित होती है, परिचित होती है। इसलिये छंदोबद्ध रचनाओं के साथ दूसरों का समन्वय या दूसरों का तारतम्य जल्दी होता है। मुक्त छंद एक ही साथ अपने में मुक्त भी है और बंधा हुआ भी। मुक्त है, क्योंकि हम बंधी हुई लय को स्वीकार नहीं करते। मुक्त है, क्योंकि हम तुकों के अनुप्रास को स्वीकार नहीं करते, कभी मिल जाये तो अच्छा, नहीं मिले तो अच्छा। लेकिन उसकी भी एक लय होनी चाहिए।

यहाँ बहुत से कवि बैठे होंगे। आप इस बात पर ध्यान दीजिए। अच्छा मुक्त छंद कौन हो सकता है? कौन अच्छा मुक्त छंद लिख सकता है? सबसे अच्छा मुक्त छंद निराला ने लिखा है। निराला छंदोबद्ध रचना के आचार्य भी थे। उनकी सबसे बड़ी कविता है 'राम की शक्ति पूजा' और दूसरी 'तुलसीदास'। ये छंदोबद्ध हैं। उनके गीत छंदोबद्ध हैं। जो छंद के लय की शिक्षा से गुजरा है, जिसको उसने अनुशासन के रूप में स्वीकार किया है वही मुक्त छंद की लय निर्धारित कर सकता है। जो मुक्त छंद ही लिखता रहा है, जिसने छंदोबद्ध कविता का अनुशासन ही प्राप्त नहीं किया वह अनगढ़ गद्य लिखता है।

मुक्त छंद लिखने के लिए भी एक रूप विधा होती है। आपने मुक्त छंद देखे होंगे जिसमें कोई लम्बी पंक्ति है तो कोई छोटी पंक्ति है। कोई उससे छोटी है तो फिर कोई बड़ी है। यह एक विधान है। यह कवि के द्वारा सांकेतिक लय का आधार है। उस आधार पर आपको उस कविता का पाठ करना चाहिए। लेकिन उसमें अगर भीतर से लय नहीं होगी तो पाठ करना मुश्किल होगा। इस बात की चेष्टा करनी चाहिये कि छंद का, लय का और काव्य-पाठ के आरोह-अवरोह का और शुद्ध उच्चारण का अभ्यास हो।

उच्चारण की शुद्धता काव्य पाठ की प्रशस्ति के लिये अनिवार्य है। उच्चारण कैसे शुद्ध होना चाहिए? जैसे बाघिन अपने बच्चे को ले जाती है। कैसे ले जाती है? दाँत से पकड़कर। बाघिन के दाँत बच्चे को अगर गड़ जायें तो? किन्तु उन्हें गड़ना नहीं चाहिए। बच्चा गिर जाए तो? पर गिरना नहीं चाहिए। बाघिन अपने बच्चे को दाँत से पकड़ती है लेकिन इस तरह से पकड़ती है कि वह दाँत न तो बच्चे को गड़ते हैं और न बच्चे गिरते हैं। ऐसे ही शुद्ध उच्चारण का अर्थ होता है कि हमने ऐसा उच्चारण किया है कि न किसी अक्षर की ध्वनि भंग हुई, न छँटी, न कटी, न बढ़ी। इसी सजगता के साथ शब्द का उच्चारण दूसरों को प्रभावित करता है। सुनने के बाद पता चलता है कि हाँ इसका उच्चारण कुछ विशिष्ट है, कुछ खास बात है और माथा झुक जाता है। यह उच्चारण पवित्र और शुद्ध होना चाहिये। वैसा अभ्यास होना चाहिये।

यह सारी की सारी कला आपको कविता के प्रेम से उभर कर आयेगी। प्रेम सब बातें सिखा देता है। किसी से आपने प्रेम किया है? जिससे आपने प्रेम किया है, उसके मर्म की बात आप तक पहुँच जाती है कि नहीं। क्योंकि उसको आपने लम्बे समय से देखा, परखा है और उसके साथ आप समरस हो गये हैं। कविता से भी अगर आप प्रेम करेंगे तो कविता के अर्थ को भी समझेंगे और कविता के पढ़ने के ढंग को भी विकसित कर पायेंगे। ❐

लौट आओ

❐ *त्रिलोक महावर*

लौट आओ
आँसुओं
वापस आँखों में
अब समंदर में भी
जगह नहीं है
खारेपन के लिये

पहाड़ों ने भी
लौटा दी हैं
विकम्पित
प्रतिध्वनियाँ

ग्लेशियर
दरक रहे हैं

धुँधलके को चीरकर
झर रहीं हैं स्मृतियाँ
सूखे पात सी
दरख्तों से

इन्तजार को
इन्तजार है
इन्तजार का

लौट आओ
फिर न लौटने के लिए ❐

मो. 7000873240